ISSN 2349-9354

समीक्षा

जुलाई-सितंबर 2016

वर्ष-49 ● अंक-2

समीक्षा

समीक्षा एवं शोध त्रैमासिक

जुलाई-सितंबर, 2016

वर्ष 49, अंक 2

संस्थापक सम्पादक

गोपाल राय

सम्पादक

सत्यकाम

संयुक्त सम्पादक

अमिताभ राय

प्रबन्धन

सीमा

समीक्षा

ISSN : 2349-9354

जुलाई-सितंबर, 2016

वर्ष: 49, अंक : 2

प्रकाशन तिथि : 30 सितंबर, 2016

मूल्य :

एक प्रति: *तीस रुपये*

संस्थाओं के लिए : *पचास रुपये*

वार्षिक सदस्यता : *दो सौ रुपये (डाक खर्च सहित)*

संस्थाओं के लिए : *तीन सौ रुपये (डाक खर्च सहित)*

आजीवन सदस्यता : *पांच हजार रुपये (डाक खर्च सहित)*

सम्पर्क:

समीक्षा

द्वारा *अमिताभ राय*

803, अमलतास, शिप्रा सृष्टि अहिंसा खंड-1,

इंदिरापुरम-201014, उ.प्र.

मोबाइल : 09582502101

ईमेल : sameekshatraimasik@gmail.com

निवेदन: कृपया सारे भुगतान केवल बैंक ड्राफ्ट अथवा ई-ट्रांसफर द्वारा निम्न चालू खाता संख्या: 2257002100011106, IFSC Code : PUNB0225700, पंजाब नेशनल बैंक, इग्नू, मैदानगढ़ी, दिल्ली-110068 में कीजिए। बैंक ड्राफ्ट 'समीक्षा' को नई दिल्ली में देय होगा। ड्राफ्ट उपरोक्त पते पर भेजें।

केंदीय हिंदी संस्थान, आगरा से सहयोग प्राप्त

पत्रिका का अंक न मिलने पर इसकी सूचना उपरोक्त पते पर दें अथवा उपर्युक्त नं. पर सम्पर्क करें।

'समीक्षा' में प्रकाशित रचनाओं के विचारों से सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। सम्पादक, संयुक्त सम्पादक पूर्णतया अवैतनिक और अव्यावसायिक।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायाधिकरण, दिल्ली होगा

आवरण चित्र: सैयद हैदर रज़ा

अनुक्रम

		पृ.सं.
संपादकीय		4
विशेष प्रस्तुति		6
केंद्रस्थ		
साहित्य में उपस्थिति के अर्थ	अशोक वाजपेयी	7
कविता		10
कविता, भूमंडलीकरण, बाजार और अंत:करण	ओम निश्चल	10
दुख से सवाद	अमिता पांडेय	13
निराशा के बावजूद उम्मीद की एक नयी वर्णमाला	विनोद तिवारी	16
काल और तत्काल के अंतराल में कवि एक खिड़की खोलता है	अर्चना वर्मा	19
हमने खूँखार समय में कुछ बचाने की कोशिश की थी	अरुण होता	25
दीर्घयामा	अजित कुमार	29
हारा हुआ आदमी भी आदमी बना रहता है	प्रियम अंकित	31
प्रेम में पगी हुई कविताएँ	प्रांजल धर	36
आलोचना		
साहचर्य का काव्यशास्त्र	मदन सोनी	40
कथेतर		
कवि की लॉग बुक	धर्मेन्द्र सुशांत	44
गद्य का बहुरंगी गुलदस्ता	शांतिनंदन	47
"पुनर्भव" यानी 'होने' के दर्शन की बहुलता का सामाजिक सातत्य	शशिभूषण द्विवेदी	49
अनुवाद		
हमारे और अँधेरे के बीच	अमिता पांडेय	52
कथेतर		
विचारों का अद्भुत कोलाज	राजेन्द्र टोकी	54
पत्र		
पत्र के रूप अनेक	वेंकटेश कुमार	57
नवांकुर		
कुफ्र: समाज का अनछुआ पक्ष	अनामिका दास	60

व्याख्यान

कविता की इतिहास दृष्टि — अरुण कमल — 63

कविता

यहाँ से आगे — शशि भूषण द्विवेदी — 67

अंधेरे से उजाले की तरफ जाने की जिद — उमा शंकर चौधरी — 75

दलित विमर्श

दलित साहित्य का विकासक्रम — बजरंग बिहारी तिवारी — 78

स्त्री विमर्श

औरत की आँख, औरत की दुनिया — विजय शर्मा — 81

सिनेमा

पंचम सुर में गूँगा बोले — बिमा कुमारी — 84

निबन्ध

स्कोलेरिस की छाँव में — मनोज कुमार मौर्य — 86

आलोचना

लेखक की कोख की पड़ताल — ललित श्रीमाली — 88

साक्षात्कार

साहित्य के अंतर्साक्ष्यों का साक्षात्कार — अरुण अभिषेक — 90

संपादकीय

श्रद्धांजलि

पिछले कुछ महीनों में भारतीय साहित्य ने अपने कई अमूल्य रत्न खो दिए। पंजाबी के गुरदयाल सिंह, बांगला की महाश्वेता देवी, असमिया लेखक माहिम बोरा, ओड़िया कथाकर मोहापात्रा नीलमणि साहू, हिंदी के प्रभाकर श्रोत्रीय हमारे बीच नहीं रहे। पर इन्होंने भारतीय साहित्य को जो समृद्धि दी है, जो विस्तार और गहराई दी है वह अतुलनीय है। इन सभी साहित्यकारों का जन्म 1947 के पहले हुआ, यानी इन्होंने गुलाम भारत को भी देखा और आजाद भारत की विडंबनाओं के भी साक्षी रहे। पर इनका साहित्य सृजन आजाद भारत में हुआ यानी 1947 के बाद।

महाश्वेता देवी (14 जनवरी 1926 - 28 जुलाई 2016) आजाद भारत की योद्धा कथाकार थीं जिन्होंने अपनी रचनाओं में युद्धरत शोषित जन को आवाज दी और उनकी वाणी और तस्वीर से रूबरू कराया जिसे भद्र लोक और सत्ता त्याज्य और अपराधी मानती रही है। नक्सलवाड़ी आंदोलन, आदिवासियों के आंदोलन, क्रांतिकारियों (सशस्त्र) के जीवन को नजदीक से दिखाया; बताया क्रांतिकारी कैसे होते हैं, कैसे बनते हैं। बीरसा मुंडा के जीवन संघर्ष पर आधारित उपन्यास लिखा 'जंगल के दावेदार' (अरण्येर अधिकार)। मूलत: बांगला में लिखित यह उपन्यास पहली बार 1975 ई. में 'वेतार जगत् पत्रिका' में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ था। इस पुस्तक को साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाजा गया था। भारतीय उपन्यास साहित्य की यह अमूल्य निधि है। नक्सल आंदोलन के कई पहलुओं को उजागार करने वाले उपन्यासों में '1084वें की माँ', 'उन्नीसवीं धारा का आरोपी' और 'मर्डरर की माँ' उल्लेखनीय हैं। आजादी के बाद की राजनीति और उससे उपजे हालातों का इससे बेहतर अंकन नहीं हो सकता। यह दलितों-वंचितों की कथा है, जिसे केंद्र में लाने का श्रेय महाश्वेता देवी को है। वे महान कथाकार होने के साथ-साथ महान इंसान और जुझारू कार्यकर्ता भी थीं। निडरता उनके व्यक्तित्व का हिस्सा था। जीवनभर अपनी मान्यताओं पर अडिग रहीं। जो भी उनसे मिला उनकी विनम्रता से नम हो गया है। जो भी उनसे टकराया उसे उनके साहस के सामने झुकना पड़ा। उनका साहित्य कथा मात्र नहीं है, मशाल है जो पथ भी दिखाती है और जरूरत पड़ने पर अवरोधों को जलाती भी चलती है।

गुरदयाल सिंह (10 जनवरी 1933 - 16 अगस्त 2016) पंजाबी के बड़े कथाकार हैं। 'माढ़ी का दीवा', 'रेत दी इक्क मुट्ठी', 'दुखिया दास कबीर का', 'अध चानीनी रात' उनकी कुछ प्रमुख कृतियाँ हैं। उन्होंने 1957 में पहली कहानी लिखी थी 'भागन वाले'। गुरदयाल सिंह की कथा उनके जीवन संघर्ष से जुड़ी है, गाँव की मिट्टी से जुड़ी है, जिसमें पंजाब की सुगंध तो है ही साथ में उसमें गरीबों का, वंचितों का संघर्ष भी है और कथाकार इनके पक्ष में खड़ा है। माही से जुड़ी ये कथाएँ भारतीय कथा साहित्य की विशेषता है। जो लोग भारतीय कथा साहित्य को यूरोपीय उपन्यास या कहानी की 'नकल' या 'अनुकरण' मानते हैं उन्हें 'माढी का दीवा' और अन्य रचनाएँ अवश्य पढ़नी चाहिए।

असमिया साहित्यकार महिम बोरा (6 जुलाई 1924 - 5 अगस्त 2016) की पहली कहानी 'हवानार सूरोत', 'मोलोया' में छपी थी। उनके उपन्यास 'एधानी माहिर हाही' को साहित्य अकादमी पुरस्कार (2001) प्राप्त हुआ था। 'राति फूला फूल', 'बारा यात्री', 'तिनिर तिनि गोल', उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

प्रसिद्ध ओड़िया साहित्यकार मोहापात्रा नीलमोनी साहू (26 दिसंबर 1926 - 25 जून 2016) प्रख्यात भारतीय कथाकार हैं। उनकी कथा शैली परंपरागत और आधुनिक शैली का सुंदर संगम है। 'प्रेम त्रिभुज', 'मिछछा बाबा', 'गनजेई ओ गबेसना' उनकी कुछ प्रमुख रचनाएँ हैं।

हिंदी के वरिष्ठ लेखक और संपादक श्री प्रभाकर श्रोत्रिय (19 दिसंबर, 1938 - 15 सितंबर 2016) का जाना साहित्य जगत के लिए एक क्षति है। आप 'वागर्थ', 'नया ज्ञानोदय' तथा 'समकालीन भारतीय साहित्य' जैसी प्रमुख पत्रिकाओं के संपादक रहे।

पुस्तकें जो पढ़ी

(क) पोस्ट बॉक्स नं. - 203 (चित्रा मुद्गल/ सामयिक प्रकाशन, दिल्ली)

चित्रा मुद्गल की हर कृति नायाब होती है, अनूठी होती है, कुछ अनकहा कह जाती है।

'लिंगहीनों' (किन्नरों) की जिंदगी पर लिखी यह पहली कथा मैंने पढ़ी है। नया अनुभव। उन्हें देखकर घर के दरवाजे बंद कर लेना, चौराहे पर कार का शीशा चढ़ा लेना, सामने से आता देख अलग हट जाना, नजरें हटा लेना यानी उनसे नफरत करना, डरना, हिकारत की नजरों से देखना हमें सिखाया-बताया गया है और वैसा ही हम करते आए हैं और आज भी करते है। बिन्नी उर्फ विनोद उर्फ बिमली की यह कहानी अंततः पाठक को कितना बदलेगी यह तो मालूम नहीं पर संवेदनात्मक धरातल पर असर तो जरूर पड़ेगा और यही है किसी कृति की सफलता। इसे ज्यादा से ज्यादा पढ़ा जाना चाहिए। प्रकाशक को इसका पेपर बैक संस्करण निकालना चाहिए, सस्ते मूल्य पर ताकि यह कथा समाज के ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँच सके और उनकी दुनिया के उस सच को जान सकें जिनसे वे नफरत करते हैं।

(ख) माटी-माटी अरकाटी (अशिवनी कुमार पंकज/राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली)

अभिमन्यु अनत का 'लाल पसीना' के बाद उसी कथाभूमि पर लिखा उपन्यास 'माटी-माटी अरकाटी' - गिरमिटिया मजदूरों के प्रवासन और उससे उपजी दुख दर्द की कथा है। दोनों उपन्यास एक दूसरे से टक्कर लेते हुए; अलग मनोभूमि, अलग दृष्टिकोण, अलग धार। दोनों की तुलना कभी फुरसत में, तफसील से। अभी तो बस इतना कि मारीशस के बनने की आदिम कथा जिस भेस में यहाँ आई है वह इसे कई तरह से दलित विमर्श/आदिवासी विमर्श की कथा बना देती है। सनातनी संस्कार (हिंदू) और आदिवासी संस्कार की टकराहट और उनसे उपजा समाज ही आज का मारीशस है! पढ़िए, गुनिए, विचारिए ... बहसिए ... ऐसी किताबें कभी-कभी ही आती हैं।

समीक्षा का यह अंक आपके सामने है। 'समीक्षा' संघर्षरत है। आपके सहयोग और साथ से हम इसे निरंतर जारी रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

ooo

विशेष प्रस्तुति

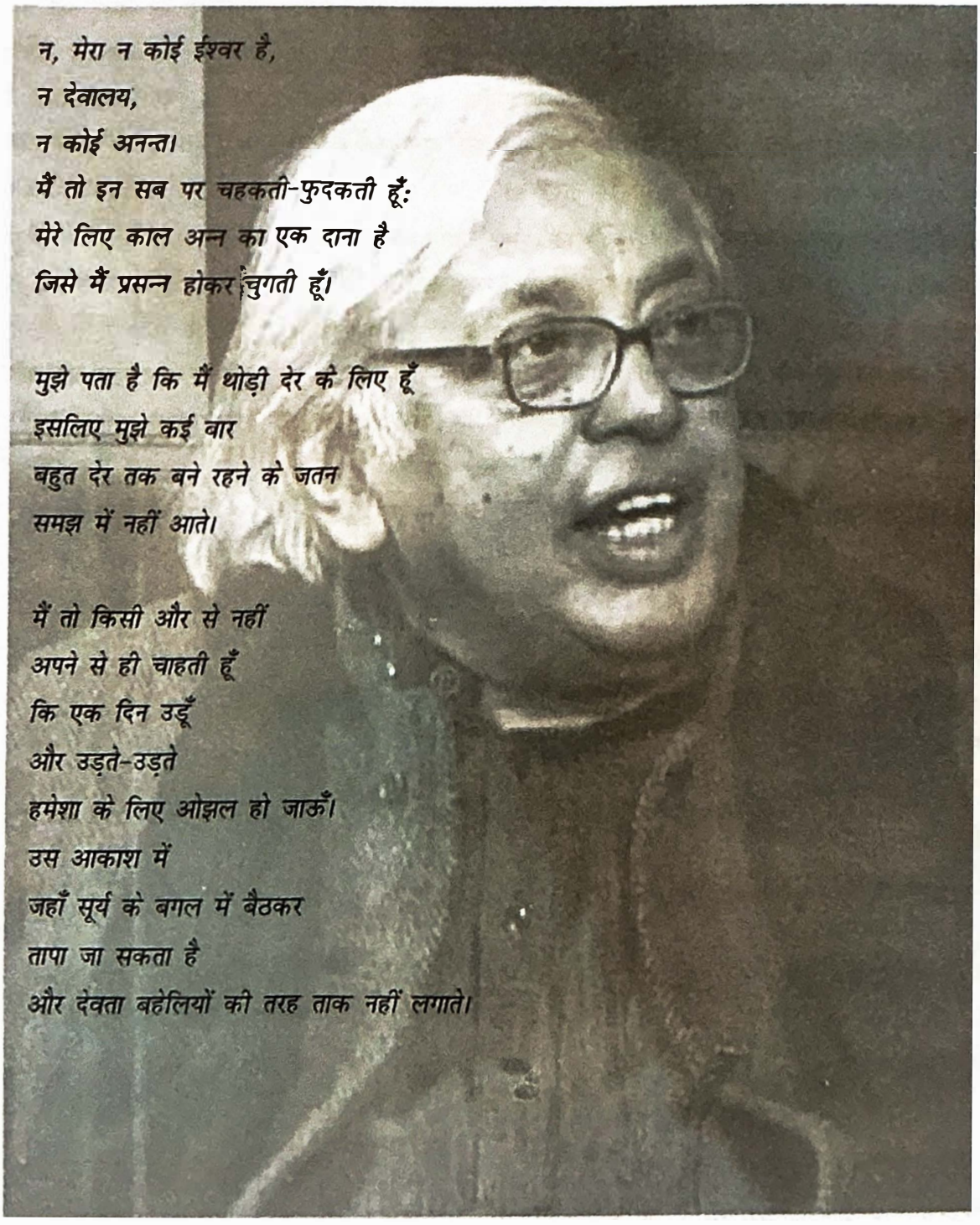

न, मेरा न कोई ईश्वर है,
न देवालय,
न कोई अनन्त।
मैं तो इन सब पर चहकती-फुदकती हूँ:
मेरे लिए काल अन्न का एक दाना है
जिसे मैं प्रसन्न होकर चुगती हूँ।

मुझे पता है कि मैं थोड़ी देर के लिए हूँ
इसलिए मुझे कई बार
बहुत देर तक बने रहने के जतन
समझ में नहीं आते।

मैं तो किसी और से नहीं
अपने से ही चाहती हूँ
कि एक दिन उड़ूँ
और उड़ते-उड़ते
हमेशा के लिए ओझल हो जाऊँ।
उस आकाश में
जहाँ सूर्य के बगल में बैठकर
तापा जा सकता है
और देवता बहेलियों की तरह ताक नहीं लगाते।

उल्लेखनीय बात है कि अशोक अपनी कविता में ईश्वरीय पवित्रता के जिस अखण्डित और समग्र अनुभव पर सहज रूप से विश्वास कर लेते हैं, गद्य की विधा में पाँव रखते ही उस पर कहीं संदेह की छाया गिरने लगती है...

काम्यू ने एक बार अपने से प्रश्न पूछा था, क्या बिना ईश्वर में विश्वास किये कोई व्यक्ति संत हो सकता है? अशोक इसे पलटकर मानो पूछना चाहते हैं कि आस्तिक आस्था के बिना क्या 'आध्यात्मिक कविता' लिखी जा सकती है?

-निर्मल वर्मा